

समावेशी कक्षा में सहपाठी सहयोग का विद्यार्थियों के समायोजन पर प्रभाव

***प्रो. छत्रसाल सिंह**

आचार्य (शिक्षाशास्त्र), शिक्षा विद्या शाखा उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)

Article Received: 25 August 2026, Article Revised: 15 September 2026, Published on: 05 October 2026

***Corresponding Author: प्रो. छत्रसाल सिंह**

आचार्य (शिक्षाशास्त्र), शिक्षा विद्या शाखा उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)

Doi: <https://doi-doi.org/101555/ijarp.3648>

सारांश

समावेशी शिक्षा आधुनिक शिक्षा व्यवस्था की एक महत्वपूर्ण अवधारणा है, जिसका उद्देश्य विभिन्न क्षमताओं, सामाजिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमियों तथा सीखने की विविध आवश्यकताओं वाले सभी विद्यार्थियों को एक समान शैक्षिक वातावरण उपलब्ध कराना है। समावेशी कक्षा में विद्यार्थियों के शैक्षणिक विकास के साथ-साथ उनके सामाजिक, भावनात्मक एवं मनोवैज्ञानिक समायोजन पर भी विशेष ध्यान दिया जाता है। इस संदर्भ में सहपाठी सहयोग एक प्रभावशाली शैक्षिक एवं सामाजिक प्रक्रिया के रूप में उभरता है। सहपाठी सहयोग के माध्यम से विद्यार्थी एक-दूसरे की सहायता करते हैं, विचारों का आदान-प्रदान करते हैं, सामूहिक गतिविधियों में भाग लेते हैं तथा सामाजिक संबंधों का निर्माण करते हैं।

प्रस्तुत शोध-पत्र का मुख्य उद्देश्य समावेशी कक्षा में सहपाठी सहयोग और विद्यार्थियों के समायोजन के मध्य संबंध का विश्लेषण करना है। अध्ययन में समायोजन को मुख्यतः सामाजिक, भावनात्मक, शैक्षिक एवं विद्यालयीय समायोजन के आयामों के संदर्भ में समझा गया है। उपलब्ध साहित्य के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि सकारात्मक सहपाठी संबंध विद्यार्थियों में अपनत्व, आत्मविश्वास, सहयोग की भावना तथा विद्यालय के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में सहायक हो सकते हैं। विशेष रूप से विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं वाले विद्यार्थियों के लिए सहपाठी सहयोग सामाजिक सहभागिता और कक्षा में स्वीकार्यता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। साथ ही, प्रभावी सहपाठी सहयोग के लिए शिक्षक की भूमिका, कक्षा का वातावरण, सहयोगात्मक गतिविधियों की प्रकृति तथा विद्यार्थियों के बीच सकारात्मक दृष्टिकोण आवश्यक हैं।

मुख्य शब्द: समावेशी शिक्षा, समावेशी कक्षा, सहपाठी सहयोग, विद्यार्थी समायोजन, सामाजिक समायोजन, भावनात्मक समायोजन, सहयोगात्मक अधिगम।

1. प्रस्तावना

शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास का महत्वपूर्ण माध्यम है। वर्तमान समय में शिक्षा का उद्देश्य केवल विद्यार्थियों को ज्ञान प्रदान करना नहीं है, बल्कि उनमें सामाजिक, भावनात्मक, नैतिक एवं व्यवहारात्मक क्षमताओं का विकास करना भी है। प्रत्येक विद्यार्थी की सीखने की क्षमता, रुचि, पारिवारिक पृष्ठभूमि और व्यक्तिगत आवश्यकताएँ अलग-अलग होती हैं। इसलिए ऐसी शिक्षा व्यवस्था की आवश्यकता है जिसमें विविधताओं को स्वीकार करते हुए सभी विद्यार्थियों को समान अवसर प्रदान किए जाएँ।

इसी विचार के आधार पर समावेशी शिक्षा की अवधारणा विकसित हुई है। समावेशी शिक्षा का मूल उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि किसी विद्यार्थी को उसकी शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक, आर्थिक या अन्य किसी भिन्नता के कारण शिक्षा की मुख्यधारा से अलग न किया जाए। समावेशी कक्षा में सामान्य एवं विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं वाले विद्यार्थी एक साथ सीखते हैं और विभिन्न गतिविधियों में सहभागिता करते हैं।

समावेशी शिक्षा की सफलता केवल विद्यालय में प्रवेश सुनिश्चित करने से नहीं होती। विद्यार्थियों का कक्षा में सामाजिक रूप से स्वीकार किया जाना, साथियों के साथ सकारात्मक संबंध स्थापित करना तथा विद्यालयी वातावरण के साथ भावनात्मक रूप से समायोजित होना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। इस दृष्टि से सहपाठी सहयोग का विशेष महत्व है।

सहपाठी सहयोग से आशय ऐसी प्रक्रिया से है जिसमें विद्यार्थी अपने समान आयु या कक्षा के अन्य विद्यार्थियों को सीखने, समझने, गतिविधियों में भाग लेने अथवा सामाजिक परिस्थितियों से निपटने में सहायता प्रदान करते हैं। यह सहयोग शैक्षणिक सहायता के साथ-साथ भावनात्मक एवं सामाजिक समर्थन का भी माध्यम बन सकता है।

2. समस्या की पृष्ठभूमि

समावेशी कक्षा में विभिन्न क्षमताओं और आवश्यकताओं वाले विद्यार्थी एक साथ अध्ययन करते हैं। ऐसी कक्षा में कुछ विद्यार्थी अपेक्षाकृत शीघ्र सीखते हैं, जबकि कुछ विद्यार्थियों को अतिरिक्त सहायता की आवश्यकता हो सकती है। विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं वाले विद्यार्थियों को कभी-कभी सामाजिक अलगाव, संकोच, कम आत्मविश्वास या सहपाठियों के साथ संबंध स्थापित करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है।

3. सैद्धांतिक आधार

3.1 सामाजिक अधिगम का दृष्टिकोण

सामाजिक अधिगम के अनुसार व्यक्ति दूसरों को देखकर तथा उनके साथ अंतःक्रिया करके विभिन्न व्यवहार सीखता है। समावेशी कक्षा में विद्यार्थी अपने सहपाठियों के व्यवहार, सहयोग एवं समस्या समाधान की प्रक्रियाओं से सीख सकते हैं। इससे सामाजिक व्यवहार और पारस्परिक सहयोग की भावना विकसित हो सकती है।

3.2 सामाजिकरचनावादी दृष्टिकोण-

सामाजिक-रचनावादी दृष्टिकोण के अनुसार ज्ञान का निर्माण सामाजिक अंतःक्रिया के माध्यम से होता है। जब विद्यार्थी समूह में कार्य करते हैं तथा अपने विचारों को एक-दूसरे के साथ साझा करते हैं, तो उनके सीखने के अवसर बढ़ते हैं। इस प्रक्रिया का प्रभाव उनके सामाजिक एवं भावनात्मक विकास पर भी पड़ सकता है।

3.3 सहयोगात्मक अधिगम

सहयोगात्मक अधिगम में विद्यार्थी एक साझा उद्देश्य की प्राप्ति के लिए समूह में कार्य करते हैं। इसमें पारस्परिक निर्भरता, व्यक्तिगत उत्तरदायित्व, प्रत्यक्ष अंतःक्रिया और सामाजिक कौशल महत्वपूर्ण होते हैं। इसलिए यह समावेशी कक्षा में सहपाठी सहयोग को बढ़ावा देने का प्रभावी माध्यम हो सकता है।

4. सहपाठी सहयोग और समायोजन का संबंध

सहपाठी सहयोग विद्यार्थियों के समायोजन को कई स्तरों पर प्रभावित कर सकता है।

4.1 सामाजिक समायोजन

जब विद्यार्थी नियमित रूप से सहपाठियों के साथ कार्य करते हैं, तो उनके बीच संवाद एवं सामाजिक अंतःक्रिया के अवसर बढ़ते हैं। इससे मित्रता, सहयोग तथा समूह से संबंधित होने की भावना विकसित हो सकती है।

4.2 भावनात्मक समायोजन

सहपाठियों से प्राप्त सकारात्मक समर्थन विद्यार्थी को यह अनुभव करा सकता है कि वह कक्षा का महत्वपूर्ण सदस्य है। इससे अकेलेपन तथा सामाजिक असुरक्षा की भावना कम करने में सहायता मिल सकती है।

4.3 आत्मविश्वास

सहपाठी द्वारा सहायता प्राप्त करने और स्वयं किसी सहपाठी की सहायता करने दोनों प्रक्रियाओं से विद्यार्थी में अपनी क्षमता के प्रति सकारात्मक धारणा विकसित हो सकती है।

4.4 विद्यालय के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण

यदि विद्यार्थी विद्यालय में सुरक्षित, स्वीकार्य और सहयोगपूर्ण वातावरण अनुभव करता है, तो उसके विद्यालय के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होने की संभावना बढ़ती है।

4.5 विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं वाले विद्यार्थियों का समायोजन

समावेशी कक्षा में विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं वाले विद्यार्थियों के लिए सहपाठी सहयोग सामाजिक सहभागिता के अवसर बढ़ा सकता है। इससे उन्हें कक्षा की गतिविधियों में अधिक सक्रिय रूप से भाग लेने में सहायता मिल सकती है।

5. शिक्षक की भूमिका

समावेशी शिक्षा की सफलता में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। समावेशी कक्षा में विभिन्न क्षमताओं, रुचियों, सामाजिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमियों तथा विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं वाले विद्यार्थी एक साथ अध्ययन करते हैं। ऐसी स्थिति में शिक्षक केवल विषय-वस्तु का ज्ञान प्रदान करने वाला व्यक्ति नहीं रहता, बल्कि वह कक्षा में सहयोगात्मक, सुरक्षित, समानतापूर्ण एवं स्वीकारात्मक वातावरण का निर्माण करने वाला मार्गदर्शक भी होता है। विद्यार्थियों के बीच सहपाठी सहयोग विकसित करने तथा उनके सामाजिक, भावनात्मक और शैक्षिक समायोजन को बेहतर बनाने में शिक्षक की भूमिका बहुआयामी होती है।

सबसे पहले, शिक्षक का दायित्व है कि वह कक्षा में **समानता एवं स्वीकार्यता का वातावरण** विकसित करे। प्रत्येक विद्यार्थी को उसकी क्षमता अथवा अक्षमता की परवाह किए बिना समान सम्मान और सहभागिता का अवसर मिलना चाहिए। शिक्षक को विद्यार्थियों में यह भावना विकसित करनी चाहिए कि प्रत्येक व्यक्ति की अपनी विशिष्ट क्षमताएँ और आवश्यकताएँ होती हैं। इस प्रकार का वातावरण विद्यार्थियों के बीच भेदभाव एवं सामाजिक दूरी को कम करने में सहायक हो सकता है।

शिक्षक की दूसरी महत्वपूर्ण भूमिका **सहपाठी सहयोग के अवसर उपलब्ध कराना** है। शिक्षक समूह कार्य, सहपाठी शिक्षण, जोड़ी कार्य, परियोजना कार्य तथा सहयोगात्मक अधिगम जैसी गतिविधियों का आयोजन कर सकता है। इन गतिविधियों में विद्यार्थियों को एक-दूसरे के साथ विचारों का आदान-प्रदान करने तथा समस्याओं का सामूहिक समाधान करने का अवसर मिलता है। इससे विद्यार्थियों के बीच सकारात्मक सामाजिक संबंध विकसित हो सकते हैं।

समूहों का उचित गठन भी शिक्षक की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। शिक्षक को समूह बनाते समय विद्यार्थियों की क्षमताओं, रुचियों, सामाजिक व्यवहार तथा विशेष आवश्यकताओं को ध्यान में रखना

चाहिए। यदि समूहों का गठन सोच-समझकर किया जाए, तो प्रत्येक विद्यार्थी को सक्रिय भूमिका प्राप्त हो सकती है और किसी विद्यार्थी के अलग-थलग पड़ने की संभावना कम हो सकती है।

समावेशी कक्षा में शिक्षक को **विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं वाले विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता** सुनिश्चित करनी चाहिए। ऐसे विद्यार्थियों को केवल सहायता प्राप्त करने वाले विद्यार्थी के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। उनकी क्षमताओं के अनुसार उन्हें भी समूह गतिविधियों में जिम्मेदारियाँ प्रदान करनी चाहिए। इससे उनमें आत्मविश्वास, आत्मसम्मान और कक्षा के प्रति अपनत्व की भावना विकसित हो सकती है।

शिक्षक की एक अन्य महत्वपूर्ण भूमिका **सहपाठियों में संवेदनशीलता और सहानुभूति विकसित करना** है। शिक्षक विद्यार्थियों को यह समझाने का प्रयास कर सकता है कि शारीरिक, बौद्धिक, भाषायी या सीखने संबंधी विविधताएँ स्वाभाविक हैं। कहानी, चर्चा, भूमिका-अभिनय, समूह गतिविधि तथा अनुभवात्मक शिक्षण के माध्यम से विद्यार्थियों में दूसरों की परिस्थितियों को समझने और उनका सम्मान करने की भावना विकसित की जा सकती है।

शिक्षक को कक्षा में **सकारात्मक व्यवहार को प्रोत्साहित** करना चाहिए। जब विद्यार्थी अपने सहपाठी की सहायता करता है, उसकी बात ध्यान से सुनता है, कठिनाई में सहयोग करता है अथवा समूह के कार्य में सकारात्मक योगदान देता है, तो शिक्षक को ऐसे व्यवहार की सराहना करनी चाहिए। इससे अन्य विद्यार्थियों को भी सहयोगात्मक व्यवहार अपनाने के लिए प्रेरणा मिलती है।

इसके साथ ही शिक्षक को **नकारात्मक सामाजिक व्यवहार की पहचान एवं रोकथाम** करनी चाहिए। उपहास, तिरस्कार, भेदभाव, धमकाना अथवा किसी विद्यार्थी को समूह से अलग करना उसके सामाजिक एवं भावनात्मक समायोजन को प्रभावित कर सकता है। इसलिए शिक्षक को कक्षा में होने वाली सामाजिक अंतःक्रियाओं पर ध्यान देना चाहिए और आवश्यकता पड़ने पर समय पर हस्तक्षेप करना चाहिए।

शिक्षक की भूमिका **प्रेरक एवं मार्गदर्शक** के रूप में भी महत्वपूर्ण है। कुछ विद्यार्थी स्वभावतः अधिक सक्रिय होते हैं जबकि कुछ विद्यार्थी संकोची हो सकते हैं। शिक्षक को सभी विद्यार्थियों को अपनी बात रखने, प्रश्न पूछने तथा गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। इससे विद्यार्थियों में आत्मविश्वास और सामाजिक सहभागिता का विकास हो सकता है।

अंततः कहा जा सकता है कि समावेशी कक्षा में शिक्षक की भूमिका केवल शिक्षण तक सीमित नहीं है। वह **सुविधादाता, मार्गदर्शक, प्रेरक, पर्यवेक्षक, समन्वयक और संवेदनशील कक्षा-नेता** के रूप में कार्य करता है। प्रभावी शिक्षक सहपाठी सहयोग को व्यवस्थित रूप से बढ़ावा देकर विद्यार्थियों के सामाजिक, भावनात्मक और शैक्षिक समायोजन के लिए अनुकूल वातावरण तैयार कर सकता है। इस

प्रकार शिक्षक समावेशी शिक्षा को वास्तविक अर्थों में सफल बनाने तथा प्रत्येक विद्यार्थी को कक्षा का सक्रिय एवं सम्मानित सदस्य बनाने में केंद्रीय भूमिका निभाता है।

6. समावेशी कक्षा में सहपाठी सहयोग की प्रमुख रणनीतियाँ

6.1 सहपाठी शिक्षण

इसमें विद्यार्थी एक-दूसरे को किसी विषय या गतिविधि को समझने में सहायता करते हैं। इससे सीखने के साथ सामाजिक संपर्क भी बढ़ता है।

6.2 सहकारी अधिगम

विद्यार्थियों को छोटे समूहों में विभाजित करके साझा कार्य दिया जाता है। समूह के प्रत्येक सदस्य को विशिष्ट जिम्मेदारी दी जा सकती है।

6.3 बड़ी सिस्टम

किसी विद्यार्थी को दूसरे विद्यार्थी के साथ जोड़ा जाता है, ताकि वह कक्षा की गतिविधियों, विद्यालयी दिनचर्या और सामाजिक सहभागिता में सहायता प्राप्त कर सके।

6.4 समूह परियोजना

सामूहिक परियोजनाओं के माध्यम से विद्यार्थी योजना निर्माण, कार्य-विभाजन, संवाद और समस्या समाधान का अभ्यास करते हैं।

6.5 सहपाठी समर्थन समूह

विद्यार्थियों के छोटे समूह बनाए जा सकते हैं, जिनमें वे अध्ययन तथा सामाजिक-भावनात्मक समस्याओं पर एक-दूसरे की सहायता करते हैं।

यदि कक्षा में सहयोगात्मक एवं स्वीकारात्मक वातावरण उपलब्ध हो, तो विद्यार्थियों के बीच सकारात्मक संबंध विकसित किए जा सकते हैं। सहपाठी जब एक-दूसरे की सहायता करते हैं, तो उनमें सहयोग, सहानुभूति, सम्मान और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसी भावनाओं का विकास होता है।

इसके विपरीत, यदि कक्षा में उपेक्षा, भेदभाव या नकारात्मक सामाजिक व्यवहार मौजूद हो, तो विद्यार्थी का विद्यालयी एवं सामाजिक समायोजन प्रभावित हो सकता है। इसलिए समावेशी शिक्षा के संदर्भ में सहपाठी सहयोग और विद्यार्थी समायोजन के संबंध का अध्ययन महत्वपूर्ण हो जाता है।

7. शैक्षिक निहितार्थ

समावेशी शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य ऐसी शिक्षा व्यवस्था का निर्माण करना है जिसमें प्रत्येक विद्यार्थी को उसकी व्यक्तिगत क्षमताओं, आवश्यकताओं और सामाजिक पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना सीखने, सहभागिता करने तथा अपनी क्षमताओं को विकसित करने के समान अवसर प्राप्त हों। समावेशी कक्षा

में विभिन्न क्षमताओं एवं आवश्यकताओं वाले विद्यार्थियों के साथसाथ अध्ययन करने से उनके बीच - सामाजिक अंतःक्रिया के अवसर बढ़ते हैं। इस प्रक्रिया में सहपाठी सहयोग विद्यार्थियों के शैक्षिक साथ उनके सामाजिक-विकास के साथ, भावनात्मक एवं व्यवहारात्मक समायोजन को प्रभावित करने वाला महत्वपूर्ण कारक बन सकता है। इस अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थों को निम्न प्रकार समझा जा सकता है।

विद्यालयों में सहयोगात्मक अधिगम को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

- शिक्षकों को समावेशी कक्षा प्रबंधन का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।
- विद्यार्थियों में विविधताओं के प्रति संवेदनशीलता विकसित करने के लिए गतिविधियाँ आयोजित की जानी चाहिए।
- विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं वाले विद्यार्थियों को समूह गतिविधियों में सक्रिय भूमिका दी जानी चाहिए।
- सहपाठी शिक्षण एवं बड़ी सिस्टम जैसी रणनीतियों का उपयोग किया जा सकता है।
- विद्यालयों में सामाजिक एवं भावनात्मक अधिगम को पाठ्यचर्या का हिस्सा बनाया जा सकता है।
- अभिभावकों एवं शिक्षकों के मध्य सहयोग को बढ़ाया जाना चाहिए।
- विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन का नियमित मूल्यांकन किया जाना चाहिए।

8. निष्कर्ष

समावेशी शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य केवल विभिन्न प्रकार के विद्यार्थियों को एक ही कक्षा में बैठाना नहीं है, बल्कि ऐसा शैक्षिक वातावरण तैयार करना है जिसमें प्रत्येक विद्यार्थी स्वयं को स्वीकार्य, सुरक्षित और सक्रिय सदस्य अनुभव करे। इस उद्देश्य की प्राप्ति में सहपाठी सहयोग महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

सहपाठी सहयोग के माध्यम से विद्यार्थियों को एक-दूसरे से सीखने, सामाजिक संबंध विकसित करने, समस्याओं का सामूहिक समाधान करने तथा भावनात्मक समर्थन प्राप्त करने के अवसर मिलते हैं। विशेष रूप से समावेशी कक्षा में यह प्रक्रिया विद्यार्थियों के सामाजिक एवं भावनात्मक समायोजन को समर्थन प्रदान कर सकती है।

हालाँकि सहपाठी सहयोग अपने आप में पर्याप्त नहीं है। इसकी प्रभावशीलता के लिए शिक्षक का उचित मार्गदर्शन, सहयोगात्मक कक्षा वातावरण, सकारात्मक विद्यालय संस्कृति तथा विद्यार्थियों में विविधताओं के प्रति सम्मान आवश्यक है। इसलिए समावेशी शिक्षा की सफलता के लिए **“साथ पढ़ना”** के साथ-साथ **“साथ सीखना और साथ सहयोग करना”** भी आवश्यक है।

9. सुझाव

समावेशी कक्षा में प्रत्येक विद्यार्थी को समान अवसर, सम्मान और सहभागिता प्रदान करना शिक्षा व्यवस्था का महत्वपूर्ण उद्देश्य है। विभिन्न क्षमताओं, रुचियों, सामाजिक पृष्ठभूमियों तथा सीखने की आवश्यकताओं वाले विद्यार्थियों को एक साथ शिक्षित करने के लिए केवल पाठ्यक्रम एवं शिक्षण विधियों में परिवर्तन पर्याप्त नहीं है, बल्कि कक्षा में सकारात्मक सामाजिक संबंधों का निर्माण भी आवश्यक है। इस दृष्टि से सहपाठी सहयोग विद्यार्थियों के सामाजिक, भावनात्मक तथा शैक्षिक समायोजन को बेहतर बनाने का महत्वपूर्ण माध्यम बन सकता है। अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किए जा सकते हैं।

9.1. सहयोगात्मक कक्षा वातावरण का निर्माण

शिक्षकों को ऐसी कक्षा संस्कृति विकसित करनी चाहिए जिसमें प्रत्येक विद्यार्थी को सम्मान, समानता और स्वीकार्यता का अनुभव हो। विद्यार्थियों को यह समझाया जाना चाहिए कि प्रत्येक व्यक्ति की क्षमताएँ एवं आवश्यकताएँ अलग हो सकती हैं और विविधता कक्षा की एक विशेषता है, समस्या नहीं।

9.2. सहपाठी सहयोग को शिक्षण प्रक्रिया का हिस्सा बनाना

सहपाठी सहयोग को केवल अतिरिक्त गतिविधि न मानकर नियमित शिक्षण प्रक्रिया का हिस्सा बनाया जाना चाहिए। समूह कार्य, सहपाठी शिक्षण, जोड़ी में कार्य तथा सामूहिक परियोजनाओं के माध्यम से विद्यार्थियों को एक-दूसरे की सहायता करने के अवसर दिए जा सकते हैं।

9.3. विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता

समावेशी कक्षा में विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं वाले विद्यार्थियों को केवल सहायता प्राप्त करने वाले विद्यार्थी के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। उन्हें भी समूह कार्यों में उनकी क्षमता एवं रुचि के अनुसार जिम्मेदारियाँ दी जानी चाहिए। इससे उनमें आत्मविश्वास, आत्मसम्मान और कक्षा से जुड़ाव की भावना विकसित हो सकती है।

9.4. विद्यार्थियों में संवेदनशीलता का विकास

शिक्षकों को विद्यार्थियों में विशेष आवश्यकताओं वाले सहपाठियों के प्रति संवेदनशीलता, सहानुभूति और सम्मान की भावना विकसित करनी चाहिए। इसके लिए कहानी, भूमिका-अभिनय, चर्चा, समूह गतिविधि और अनुभववात्मक गतिविधियों का उपयोग किया जा सकता है।

9.5. सहपाठी शिक्षण को प्रोत्साहन

विद्यार्थियों को एक-दूसरे को पढ़ाने एवं समझाने के अवसर प्रदान किए जाने चाहिए। सहपाठी शिक्षण से एक ओर जिस विद्यार्थी को सहायता की आवश्यकता है उसे सहयोग मिलता है, वहीं सहायता करने वाले विद्यार्थी में नेतृत्व, जिम्मेदारी और संचार कौशल विकसित होते हैं।

9.6. सामाजिक एवं भावनात्मक समायोजन पर ध्यान

समावेशी शिक्षा में केवल शैक्षिक उपलब्धि को सफलता का आधार नहीं बनाया जाना चाहिए। विद्यार्थियों के सामाजिक संबंध, आत्मविश्वास, भावनात्मक सुरक्षा, विद्यालय के प्रति दृष्टिकोण तथा समूह में सहभागिता पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए।

9.7. शिक्षक की सक्रिय एवं सकारात्मक भूमिका

सहपाठी सहयोग की सफलता में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। शिक्षक को समूहों का गठन करते समय विद्यार्थियों की क्षमताओं एवं आवश्यकताओं को ध्यान में रखना चाहिए। साथ ही यह सुनिश्चित करना चाहिए कि किसी विद्यार्थी को लगातार उपेक्षित या अलग-थलग न किया जाए।

9.8. सहयोगात्मक गतिविधियों में समान अवसर

समूह गतिविधियों में प्रत्येक विद्यार्थी को भाग लेने का अवसर मिलना चाहिए। किसी एक विद्यार्थी द्वारा पूरे समूह का कार्य कर दिए जाने के बजाय कार्य को इस प्रकार विभाजित किया जाना चाहिए कि सभी सदस्य अपनी भूमिका निभा सकें।

9.9. सकारात्मक व्यवहार को प्रोत्साहन

जब विद्यार्थी अपने सहपाठी की सहायता करें, उसकी बात सुनें या किसी कठिनाई में सहयोग प्रदान करें, तो शिक्षक द्वारा ऐसे व्यवहार को सकारात्मक रूप से प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इससे कक्षा में सहयोगात्मक व्यवहार की संस्कृति विकसित होगी।

9.10. सामाजिक बहिष्कार एवं भेदभाव की रोकथाम

समावेशी कक्षा में किसी विद्यार्थी का मजाक उड़ाना, उसे समूह से अलग करना, उसकी अक्षमता को लेकर टिप्पणी करना अथवा उसके साथ भेदभाव करना उसके समायोजन को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है। इसलिए विद्यालय को ऐसे व्यवहार की रोकथाम के लिए स्पष्ट नियम एवं प्रभावी व्यवस्था विकसित करनी चाहिए।

9.11. बड़ी सिस्टम का प्रयोग

समावेशी कक्षा में "बड़ी सिस्टम" अपनाया जा सकता है, जिसमें किसी विद्यार्थी को एक या अधिक सहपाठियों के साथ जोड़ा जाता है। सहपाठी उसे कक्षा की गतिविधियों, अध्ययन तथा विद्यालयी दिनचर्या में आवश्यक सहायता प्रदान कर सकते हैं। इससे विद्यार्थी में अपनत्व और सामाजिक सुरक्षा की भावना विकसित हो सकती है।

9.12. अभिभावकों की सहभागिता

विद्यार्थियों के सामाजिक एवं भावनात्मक समायोजन को बेहतर बनाने के लिए अभिभावकों और शिक्षकों के बीच नियमित संवाद आवश्यक है। अभिभावकों को सहपाठी सहयोग और समावेशी शिक्षा

के महत्व के बारे में जानकारी दी जानी चाहिए तथा विद्यार्थियों के व्यवहार एवं प्रगति से संबंधित सूचनाओं का आदान-प्रदान किया जाना चाहिए।

9.13. शिक्षकों के लिए विशेष प्रशिक्षण

शिक्षकों को समावेशी शिक्षा, सहयोगात्मक अधिगम, कक्षा प्रबंधन तथा सामाजिक-भावनात्मक अधिगम से संबंधित प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए। प्रशिक्षित शिक्षक विद्यार्थियों की विविध आवश्यकताओं को बेहतर ढंग से समझकर सहपाठी सहयोग को प्रभावी रूप से व्यवस्थित कर सकते हैं।

9.14. विद्यालय में सकारात्मक सामाजिक संस्कृति

समावेशी शिक्षा की सफलता केवल कक्षा तक सीमित नहीं होनी चाहिए। विद्यालय के प्रत्येक स्तर पर सहयोग, समानता, सम्मान और सहभागिता की संस्कृति विकसित की जानी चाहिए। खेल, सांस्कृतिक कार्यक्रम, प्रार्थना सभा, क्लब तथा अन्य सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में भी सभी विद्यार्थियों की सहभागिता सुनिश्चित की जानी चाहिए।

9.15. विद्यार्थियों के समायोजन का नियमित मूल्यांकन

विद्यालयों में विद्यार्थियों के सामाजिक, भावनात्मक और विद्यालयीय समायोजन का समय-समय पर मूल्यांकन किया जाना चाहिए। इससे ऐसे विद्यार्थियों की पहचान करने में सहायता मिलेगी जिन्हें अतिरिक्त सामाजिक या भावनात्मक सहयोग की आवश्यकता है।

9.16. भविष्य के शोध को प्रोत्साहित करना

भविष्य में विभिन्न आयु-समूहों, ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों तथा विभिन्न प्रकार की विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं वाले विद्यार्थियों के संदर्भ में सहपाठी सहयोग और समायोजन का अध्ययन किया जाना चाहिए। इससे समावेशी शिक्षा के लिए अधिक प्रभावी रणनीतियों का विकास किया जा सकेगा।

निष्कर्षात्मक सुझाव

अंततः यह कहा जा सकता है कि समावेशी कक्षा में सहपाठी सहयोग को केवल शैक्षणिक सहायता की प्रक्रिया के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए, बल्कि यह विद्यार्थियों के सामाजिक एवं भावनात्मक विकास का भी महत्वपूर्ण माध्यम है। यदि कक्षा में सहयोग, समानता, स्वीकार्यता और सम्मान का वातावरण विकसित किया जाए तथा प्रत्येक विद्यार्थी को सक्रिय सहभागिता का अवसर दिया जाए, तो विद्यार्थियों के समायोजन की प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है। अतः विद्यालय, शिक्षक, सहपाठी और अभिभावक—सभी को मिलकर ऐसा वातावरण निर्मित करना चाहिए जिसमें प्रत्येक विद्यार्थी स्वयं को कक्षा और विद्यालय का महत्वपूर्ण एवं स्वीकार्य सदस्य अनुभव करे।

10. संदर्भ ग्रंथ सूची

1. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ,2006)। *समावेशी शिक्षा विशेष आवश्यकता : वाले बच्चों को शिक्षा में शामिल करना*। नई दिल्लीएनसीईआरटी :
2. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ,2006)। *विद्यालयों में विशेष आवश्यकताओं की पूर्ति एक मार्गदर्शिका* :। नई दिल्लीएनसीईआरटी। :
3. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् । 2006 । *विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को शामिल करना उच्च प्राथमिक स्तर* :। नई दिल्लीएनसीईआरटी। :
4. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् 2020 । *राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020*। नई दिल्ली : शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार।
5. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् । *समावेशी शिक्षण व्यवस्था के लिए कुछ सुझाव*। नई दिल्लीएनसीईआरटी। :
6. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्। *शिक्षा में समावेशन विद्यालय प्रबंधन समिति के : लिए संदर्शिका*। नई दिल्लीएनसीईआरटी। :
7. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्)। *समावेशी शिक्षा शिक्षकों के लिए सहायता : सामग्री*। नई दिल्लीएनसीईआरटी। :
8. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् । *माध्यमिक स्तर पर सभी बच्चों को विज्ञान और गणित शिक्षण समावेशी शिक्षा मॉड्यूल* :। नई दिल्लीएनसीईआरटी। :
9. भारत सरकार 2016 *दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016*। नई दिल्लीभारत : सरकार।
10. भारत सरकार। *समग्र शिक्षा समावेशी शिक्षा* :। शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार। समावेशी शिक्षा के अंतर्गत विद्यार्थियों के शैक्षिक एवं सामाजिक विकास के लिए आवश्यक सहयोग और सुविधाओं का उल्लेख किया गया है।
11. केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड , 2016 *समावेशी शिक्षा कक्षा :IX के लिए मुक्त पाठ्य सामग्री*। नई दिल्लीसीबीएसई। इसमें विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के प्रति संवेदनशीलता तथा सहपाठी : एवं सामाजिक सहयोग के महत्व पर बल दिया गया है।
12. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (NCERT)। (2014)। *समावेशी शिक्षा*। भारतीय आधुनिक शिक्षा, 35(2), 24–29।